मधुवन ओम् शान्ति अंक 249 अप्रैल 2013

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई-बहिनों प्रति मधुर याद पत्र
(11-03-13)

परमप्यारे अव्यक्त मूर्त मात-पिता बापदादा के अति स्नेही, सदा परमात्म मिलन की मौजों में रहने वाले, संगमयुगी पदमापदम भाग्यवान निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण बाबा के नूरे रत्न,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - आप सभी ब्रह्मा बाप समान डबल लाइट फरिश्तेपन स्थिति में रह, अपने खुशमिजाज़ चेहरे द्वारा सबको खुशियों की अनुभूति कराते हुए बापदादा को विश्व के कोने-कोने में प्रत्यक्ष करने की बेहद सेवायें कर रहे हो। सब तरफ से शिव जयन्ती की सेवाओं के खुशियों भरे समाचार, ईमेल आदि प्राप्त हो रहे हैं। बापदादा भी सबको दिल से बहुत-बहुत दुआयें दे रहे हैं। हर ब्राह्मण बच्चे के दिल में शिव भोलानाथ बाप की यादें समाई हुई हैं। इस बार बापदादा ने विशेष सबको अशरीरीपन की ड्रिल कराई और इशारा दिया कि बच्चे अब समय बहुत नाज़ुक आने वाला है इसलिए जब समय मिले बीच-बीच में यह ड्रिल करते रहना। आप सभी ने अव्यक्त बापदादा के यह महावाक्य तो सुने ही होंगे, कैसे प्यार का सागर बाबा अपने बच्चों को दिल में समाते, अनेक वरदानों से भरपूर कर रहे हैं।

यहाँ भी शिव जयन्ती निमित्त सभी स्थानों पर शिवबाबा की स्मृतियों के साथ झण्डे फहराये गये। सबने खूब खुशियां मनाई। अभी तो फिर होली का पावन त्योहार समीप आ रहा है। बापदादा ने तो अपने संग के रंग में हम सबको रूहानियत का पक्का रंग लगाया है। आज भी बाबा कहे सत्यता, पवित्रता और दिव्यता को धारण कर अपने चेहरे और चलन द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करने की सेवा करो। अब बीती सो बीती कर, होली बन सच्ची होली मनाओ। तो इस यादगार त्योहार की भी सबको बहुत-बहुत बधाईयां।

मुझे तो सदा यही ध्यान रहता कि एक बाबा के ही चिंतन में रहूँ और कोई बात मन चित में न हो। इसमें अपने आपको बड़ा सम्भालना है। साक्षी और साथी बन पार्ट प्ले करना है। जो भी बाबा के बच्चे हैं, बाबा को सब अच्छे लगते हैं क्योंकि बाबा के तो बन गये। लेकिन हर एक बाबा का सपूत, सुपात्र बच्चा बनें, बाबा यह भी ध्यान खिंचवाता है। जब मेरा बाबा कहा है तो भूल से भी कोई देहधारी से लगाव न हो। न किसी से प्रभावित हों, न किसी के लिए घृणा हो।

मैं तो देख रही हूँ साकार मुरलियों में बाबा ने जो भी कहा है सो अभी हो रहा है। जिसने साकार मुरली को गहराई से समझा, उसे पता चलता है कि निश्चय क्या होता है! परमात्मा क्या होता है, हम आत्मा क्या हैं? मैंने तो साकार को देखा तब भी ऐसा था, अब भी ऐसा है। साकारी भासना भी है और साकार, अव्यक्त कैसे बना वो भी भासना है, निराकार को कैसे साथी बनायें, यह भी अनुभव है। तो बाबा हम बच्चों को भी अपने समान बना रहा है। बाकी इस बार दादी गुल्जार ने मुझे पर्सनल जो बापदादा के वरदानी बोल सुनाये, वह आप सबको भी सुनाती हूँ। बाबा कहे बच्ची 1. रहमदिल, पूर्वज और पूज्य बनने के अधिकारी हो। 2. मन की डोरी हाथ में रखने के अभ्यासी हो। 3. संस्कार मिलन का आधार एक दो में फेथ और रिसपेक्ट रखने की सरल नेचर वाली हो। 4. मुरली का महत्व और मनन शक्ति के अभ्यासी हो इसलिए नेचुरल बाप की मदद के अधिकारी हो। तो आप सभी भी इन वरदानों को प्रैक्टिकल जीवन में लाते, उड़ती कला में उड़ते रहना। अच्छा - सर्व को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के. जानकी

ये अव्यक्त इशारे

मनजीत, मायाजीत, जगतजीत बनो

1) मनजीत अर्थात् मन के व्यर्थ संकल्प, विकल्प जीत। ऐसे जीते हुए बच्चे विश्व के राज्य अधिकारी बनते हैं इसलिए मन जीते जगतजीत गाया हुआ है। जितना इस समय संकल्प-शक्ति अर्थात् मन को स्व के अधिकार में रखते हो उतना ही विश्व के राज्य के अधिकारी बनते हो।

2) मायाजीत बनने के लिए मास्टर सर्वशक्तिवान बनो। मास्टर सर्वशक्तिवान बनने की विधि है – चलते-फिरते याद और सेवा की शक्ति जमा करो और उसका दूसरों को दान करो। जितना देने में बिजी रहेंगे उतना मायाजीत रहेंगे। इसके लिए रोज़ अपने मन का टाइमटेबुल बनाओ। मन बिजी होगा तो मनजीत मायाजीत हो ही जायेंगे।

3) चेक करो कि मन-बुद्धि-संस्कार कन्ट्रोल में हैं? मन आपको चलाता है या आप मन को चलाने वाले हो? जब ये कम्पलेन करते हो कि मेरा मन आज लगता नहीं, मेरा मन आज भटक रहा है तो क्या मनजीत हुए? आज मन उदास है, आज मन और आकर्षण की तरफ जा रहा है – क्या ये विजयी के संकल्प हैं? तो जो स्वयं पर विजय नहीं पा सकते हैं वो विश्व पर कैसे विजय प्राप्त करेंगे? इसलिये चेक करो कर्मेन्द्रिय जीत, मन जीत कहाँ तक बने हैं?

4) मन को ऑर्डर से चलाओ। सेकण्ड में जहाँ चाहो वहाँ मन लग जाये, टिक जाये। यह एक्सरसाइज़ करो। सदा मन के मालिक बन एकाग्रता की शक्ति द्वारा मन को कन्ट्रोल करने वाले मनजीत, जगतजीत बच्चे, ब्राह्मण जीवन की विशेषता पवित्रता के पर्सनैलिटी में रहते हैं इसलिए वे ब्रह्मा बाप समान सदा डबल लाइट बन फरिश्ता जीवन का अनुभव करते हैं।

5) जैसे बैज लगाते हो वैसे मस्तक पर यह विजय का बैज लगाओ कि मैं मनजीत, मायाजीत विजयी आत्मा हूँ। मैं जगतमाता, शिवशक्ति हूँ, यह दोनों रूप स्मृति में रखने से मायाजीत बन जायेंगे और विश्व के कल्याण की भावना से कई आत्माओं के कल्याण के निमित्त बनेंगे।

6) मायाजीत बनने के लिए सर्वशक्तिमान बाप को सर्व सम्बन्ध से अपना बना लो। जब सर्व संबंध एक के साथ जुट गये तो और बात रही ही क्या! जब कुछ रहता ही नहीं तो बुद्धि जायेगी कहाँ! अगर बुद्धि इधर-उधर जाती है तो सिद्ध होता है कि सर्व संबंध एक के साथ नहीं जोड़े हैं।

7) माया भी बड़ी चतुर है, कभी भी वार करने के लिए पहले साथ और हाथ छुड़ाकर अकेला बनाती है। जब अकेले कमजोर पड़ जाते हो तब माया वार करती है। वैसे भी अगर कोई दुश्मन किसी के ऊपर वार करता है तो पहले उनको संग और साथ से छुड़ाते हैं। कोई ना कोई युक्ति से उनको अकेला बनाकर फिर वार करते हैं तो माया भी पहले साथ और हाथ छुड़ाकर फिर वार करती है। अगर साथ और हाथ छोड़ो ही नहीं तो फिर सर्वशक्तिमान साथ होते माया कुछ भी नहीं कर सकती है। मायाजीत हो जायेंगे।

8) बाप को सदा साथ रखने के लिए अपने को मर्यादा की लकीर के अन्दर रखो, लकीर के बाहर ना निकलो। बाहर निकलते हो तो फकीर बन जाते हो फिर मांगते रहते हो यह मदद मिले, यह सैलवेशन मिले। फकीर बनने का अर्थ ही है - हेल्थ, वेल्थ गंवा देते हो। तो ना लकीर को पार करो, ना फकीर बनो। लकीर के अन्दर रहने से मायाजीत बन जायेंगे। लकीर को पार करने से माया से हार खा लेते हो।

9) ब्रह्माकुमार कुमारी बने तो भाग्यशाली बन ही गये लेकिन भाग्यशाली के साथ-साथ शक्तिशाली भी बनना है। जैसे भाग्यशालीपन का नशा अविनाशी है, इसे कोई नाश नहीं कर सकता। ऐसे शक्तिशाली भव का वरदान वरदाता से ले लो तो कभी माया से हार नहीं खायेंगे।

10) जैसे वारियर को विजय प्राप्त करने की धुन लगी रहती है। क्या ऐसे मायाजीत बनने की लगन, अग्नि की तरह प्रज्जवलित है? वर्तमान समय सेवा का फल साधनों के रूप में और महिमा के रूप में प्राप्त होने का समय है, इसी समय अगर यह फल स्वीकार कर लिया तो फिर कर्मातीत स्टेज का फल, सम्पूर्ण तपस्वीपन का फल और अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति का फल प्राप्त नहीं हो सकेगा।

11) यह निश्चय व स्मृति और समर्थी रखो कि अनेक बार बाप के बने हैं व मायाजीत बने हैं, तो अब बनना क्या मुश्किल है! क्या यह स्मृति स्पष्ट नहीं है कि मुझ श्रेष्ठ आत्मा ने विजयी बनने का पार्ट अनेक बार बजाया है? अगर स्मृति स्पष्ट नहीं है तो इससे सिद्ध है कि बाप के आगे स्वयं को स्पष्ट नहीं किया है।

12) शक्तियों के यादगार चित्र में मायाजीत की निशानी शस्त्र और लाइट का क्राउन दिखाते हैं और प्रकृति जीत की निशानी शेर पर सवारी दिखाते हैं। यह पशु-पक्षी आदि प्रकृति की निशानी है। प्रकृति के तत्व भी शक्ति-स्वरुप को भयभीत नहीं कर सकते। प्रकृति पर भी सवारी अर्थात् अधिकार। प्रकृति भी उनकी दासी बन गई अर्थात् उनका सत्कार कर रही है।

13) माया की चतुराई को जानकर मनजीत, मायाजीत बनो। चेक करो कि मन एक यथार्थ ठिकाने की बजाए और कोई अल्प-काल के ठिकाने तरफ भागता तो नहीं है? अगर न चाहते हुए भी बुद्धि चली जाती है, मन भटक जाता है तो जरूर कोई न कोई ठिकाना है! तो सब हद के ठिकाने चेक करके उन्हें समाप्त करो।

14) कोई भी बात में जब दृढ़ता का संकल्प रखते हो तब ही सफलता होती है। दृढ़ संकल्प वाले ही मायाजीत होते हैं। माया से हार खाने वाले तो नहीं हो ना! जब माया को परखते नहीं तब ही धोखा खाते हैं। परखने वाले कभी धोखा नहीं खा सकते।

15) जैसे प्रभु की लीला अपरम्पार है तो बच्चों की भी लीला अपरम्पार है। रोज़ की नई रंगत होती है। कई बच्चे माया की नई रंगत में रंग जाते हैं। स्वदर्शन चक्र के बजाए व्यर्थ दर्शन का चक्र चल जाता है। द्वापर से जो व्यर्थ कथाएं और कहानियां बड़ी रुचि से सुनने और सुनाने की आदत है, वह संस्कार अभी भी अंश रूप में आ जाते हैं इसलिए कमल पुष्प समान अर्थात् कमल पुष्प के अलंकारधारी नहीं बन सकते। कमल की बजाय कमज़ोर बन जाते हैं। दूसरों को मायाजीत बनने का सन्देश देते, लेकिन स्वयं मायाजीत हैं या नहीं, यह सोचते ही नहीं इसलिए अलंकारी नहीं बन सकते। अलंकारी बनो न कि देह-अहंकारी।

16) महावीर अर्थात् सदा मायाजीत। महावीर कभी माया से घबराते नहीं, चैलेंज करते हैं। किसी भी रूप में माया आवे, लेकिन परखने की शक्ति से माया को परखते हुए विजयी होंगे। माया को दूर से आते हुए परख लेते हो वा जब माया वार करने शुरू करती है तब परखते हो? जितनी परखने की शक्ति तेज होती जायेगी तो दूर से ही माया को भगा देंगे।

शिवबाबा याद है ? **20-01-12** *ओम् शान्ति* *मधुबन*

"हर बात में बाबा बाबा करते चलो तो बाबा मदद करेगा"

(दादी जानकी)

आज जो बाबा ने कहा वो किया तो हम फरमानबरदार हुए। मुरली अनुसार अपना होमवर्क खुद ही बनायें, बस कोई ज्यादा पुरुषार्थ की बात ही नहीं है क्योंकि मुरली में सब डायरेक्शन्स होते हैं जिससे ही चारों सबजेक्ट कवर होते हैं। संगम के समय का बहुत महत्व है, इसी समय के आधार पर सारे कल्प के लिए तकदीर बनती है। अभी के संगम के पुरुषार्थ से ही आगे का पोस्ट पोजीशन मिलना है और अन्त तक वही चलना है। संगम में हम बाबा के साथ हैं तो बुद्धियोग भी एक बाबा के साथ ही रहे और एक बाबा ही मददगार भी तो है। हर बात में बाबा बाबा बाबा, छोटे बच्चे की तरह करते कहते रहो तो जो चाहो वो मदद बाबा करेगा। लेकिन बाबा को जब भूलते हैं तो पुरुषार्थ में मेहनत लगती है, बाकी मेहनत नहीं है। जब हमारे कोई पुराने संस्कार सामने आते हैं फिर मेहनत है बाकी तो सहज है। बुद्धि की लाइन क्लीयर होनी चाहिए इसके लिए सेकेण्ड-सेकेण्ड अटेन्शन बहुत चाहिए। एक सेकेण्ड में फुलस्टॉप लगा सकती हूँ, चेक करो। इसमें बाबा को याद करेंगे तो बाबा मदद करेगा, इसलिए थोड़ा मेहनत करो अच्छी तरह से क्योंकि अभी तो बाबा इशारा दे रहा है, अन्त में कहेगा तुमने जो किया वो देखो। अभी तो प्यार से इशारा दे रहा है तो उसे मानके चलो।

30 साल से 40 साल तक की पुरानी बहिनों के साथ दादी जानकी जी की रूहरिहान

1) प्लैटेनिम जुबिली और 2012, अभी घड़ी-घड़ी कान में आवाज आता है, क्या कर रहे हैं क्या करना है? इतने वर्षों में जो बाबा से पालना ली है, जो प्राप्तियां की हैं, उस अनुभव के आधार पर कहने में आता है कि हम ब्राह्मणों के खजाने में कोई भी कमी नहीं है।

2) 75 साल वाले हों या 5 साल वाले सेम पुरुषार्थ कर सकते हैं, यह भी भगवान की मेहरबानी है। कोई भी पुरुषार्थ करते लास्ट सो फास्ट, फास्ट सो फर्स्ट में आ सकते हैं।

3) अभी हमारे जो संकल्प हैं, श्वांस हैं, समय है यह तीनों सफल हों। हर संकल्प श्वांस और समय की वैल्यु को बढ़ाना है। सी फादर फॉलो फादर। अन्दर से यही आवाज निकलता है कि मुझे सपूत बन सबूत देना है। जितनी पालना और पढ़ाई मिली है, उसी अनुसार सपूत बनने का लक्ष्य है।

4) सच्चाई, सफाई और सादगी यह सपूत बच्चे की निशानी है। स्थूल सूक्ष्म सफाई हेल्दी माइन्ड बनाती है। सच्चाई बाबा के दिल में बिठाती है। हमारे यज्ञ में सफाई का बहुत महत्व है। जितनी यज्ञ में, भण्डारे में सफाई है उतनी दिल की भी सफाई हो। कोई बात दिल में नहीं है, दिल साफ है। तो सफाई, सच्चाई और सादगी इसमें कौन हैं जो पूरा पास हैं?

5) सफाई से देही-अभिमानी स्थिति अच्छी बनती है। जरा भी देह-अभिमान है तो दिल साफ बनने नहीं देगा। बाबा की हर मुरली देही-अभिमानी स्थिति में रहने की शिक्षा देती है। कोई कोने में भी देह अभिमान छिपा हुआ बैठा न हो। अन्दर से देखें। दिल को अन्दर से साफ रखने के लिए अन्तर्मुखता, एकाग्रता चाहिए। फिर सच्चाई ऐसी जो झूठ की रत्ती भी नहीं। सच्ची दिल से मेरा साहेब राज़ी है।

6) सच्चाई, सफाई के साथ फिर सादगी की वैल्यु बहुत है। एकनामी और एकानामी से चले हैं। कभी कोई भी चीज़ में जरा भी लोभ न हो। तो रात को भी नींद फिटाकर ऐसा पुरुषार्थ करो तो बड़ा मजा आयेगा। बाबा ऐसे पुरुषार्थ करने वालों को बहुत प्यार करता है।

7) अन्दर कभी रेस्टलेस न हो, कई हमारे बहन भाई बहुत थके हुए दिखाई देते हैं। योग में भी थकावट। यह थकावट की बीमारी तीव्र पुरुषार्थ कैसे करने देगी। तीव्र पुरुषार्थ करो, थको नहीं, सेवा कितनी भी करो थको नहीं। अन्दर व्यर्थ संकल्प थकाते हैं। व्यर्थ संकल्प का एकदम नामनिशान भी न हों, सदा समर्थ संकल्प हों।

8) प्लैन ही नहीं बनाते रहो। जो ड्रामा प्लैन है या बड़ों ने जो प्लैन बनाये हैं, उसे प्रैक्टिकल करने में सदा हाज़िर रहना है। यह कोई मेरे लिए न कहे कि प्लैन तो बहुत बनाती है। निमित्त कोई प्लैन बनाते हैं, अच्छा है। सारे विश्व की सेवा हो जाती है।

9) एक याद बहुत अच्छी हो, दूसरा जीवन में वैल्युज़ हों। धीरे बोलो, मीठा बोलो, सच बोलो। यह चार्ट हर एक को रखना चाहिए। बाबा की जो ऐसी मीठी-मीठी बातें सुनी हैं, वह मीठा बनने के लिए सुनी हैं। बाबा मीठे बच्चे किसको कहेगा? जो सफाई, सच्चाई, सादगी से चलता है। कभी फालतू खर्च नहीं करता। कभी कोई काम छिपाके नहीं किया है। तो सच्चाई, सफाई, सादगी तीनों का रिकॉर्ड अच्छा रहे।

10- परिवार के साथ बड़ा प्यार है। जो सच्चा पुरुषार्थ करते हैं उन्हें बाबा की दुआयें मिलती हैं। हमारा है गुड विशश। शुभ भावना, शुभ कामना। प्युअर फीलिंग, गुड विशश। यह भी अपना रिकॉर्ड रखना है। मेरे अन्दर जो फीलिंग है वह सबके लिए अच्छी हो। कोई भी खराब नहीं है। यह खराब है ऐसा सोचना, देखना, मुख से बोलना भी मेरी गलती है। ऐसी गलती कभी नहीं करेंगे। तो देखना है सदा शुभ चिंतन है? चिंतन ऐसा वैसा नहीं है, शुभ है! आखिर शुभ भावना काम करती है, छोड़ना नहीं है। कोई आत्मा ने चेंज होने में टाइम लगाया है, मैं उसे छोड़ दूं तो मेरी गलती है। और भी पॉवरफुल, शुद्ध श्रेष्ठ, दृढ़ संकल्प हो। ऐसा चार्ट रखते-रखते बाबा ने यहाँ तक लाया है।

11) भले बाहर से साधारण हैं, हमें कोई गद्दी नहीं चाहिए। मान शान की भूख नहीं है लेकिन सच्चाई और प्रेम का अवतार हैं। बाबा ने कैसे कायदे कानून बनाकर दिये हैं, उन कायदों, मर्यादाओं पर कोई चलके देखे। जो चले हैं वह चल पड़े हैं। जो नहीं चले हैं, वह यहाँ टिक नहीं सके। भगवान ने प्यार से लव से लॉ पर चलना सिखाया है। लव से लॉ है इसलिए कभी रूखा नहीं बनना चाहिए। फालतू बात नहीं करनी है, पर रूखा भी नहीं बनना है। अन्दर से रमणीकता हो, गम्भीरता भी हो।

12) अपने ऊपर जितना ध्यान रखो उतना भगवान हमसे खुश होता है। कईयों का ध्यान औरों की तरफ बहुत जाता है। सोचेंगे यह ऐसे करता, वैसे करता। लेकिन कोई गलत भी करता है, तुम उसकी गलती को न देखो, वर्णन भी नहीं करो। बाबा जाने वह जाने।

13) सब बच्चे बाबा के हैं, जो अच्छा करता है बाबा उसको रिटर्न देता है। अच्छा नहीं करता है तो बाबा उसे छोड़ नहीं देता है, कोई भी कारण हो, कभी किसको यज्ञ से बाहर जाने का ख्याल न आये। कम-से-कम अच्छे संग में तो बैठा है, अच्छा खाने पहनने को मिल रहा है। किसी भी कारण जो यहाँ से गये, उनको जैसे सजा हो गई, खाना पहनना भी ठीक नहीं मिला।

14) हम आज ब्राह्मण हैं, कल फरिश्ता बनेंगे। फरिश्ते को और कुछ काम नहीं है। बाबा है शिक्षक, फरिश्ते हैं रक्षक। बाबा की शिक्षाओं को पालन करने वाला रक्षक है। जहाँ वह हाजिर है सबकी रक्षा हो रही है, कोई गलत काम नहीं कर सकता। श्रेष्ठ कर्म किसको कहते हैं? वह अलबेले नहीं रहेंगे, सुस्त नहीं रहेंगे। बाबा के हर बोल सत् वचन के रूप में पालन करेंगे। जैसे बाबा ने हमारी जीवन को अच्छा ऊंचा बनाने के

लिए संग का रंग लगाया है, ऐसे अपना रंग लगाते रहेंगे।

15) फरिश्ते डायरेक्ट ईश्वर की सन्तान हैं, उनको और कोई माँ बाप है नहीं। देह से न्यारे हैं। प्रभु के प्यार में उनके समान बनने की लगन में हैं। सदा सामने बाप को देखा, समान बनने की धुन लगाई। तो बाबा ने जो हमारे में उम्मीदें में रखी हैं, वह पूरी करनी है। मेरी भावना है, मैं फील करती हूँ, हम साधारण नहीं हैं।

16) निश्चय में विजय है, जो वैजयन्ती माला में आने वाली क्वालिटी है उसके निश्चय की बलिहारी है। जैसा लक्ष्य रखते हैं वैसे लक्षण आ जाते हैं। 108 में आने की धुन लगी हो, निश्चय हो तो 108 में आ जायेंगे, पक्का कुछ भी हो जाए विजय हुई पड़ी है, डाउट नहीं है। फिर 8 में आने वाले नम्बरवार नहीं हैं, वह तो नम्बरवन हैं।

17) फरिश्ता बनने वाली आत्मा क्वालिटी वाली होगी। वह सारे विश्व को प्रेरणा देने वाले, वायब्रेशन देने वाले होंगे। तो शरीर में होते हमको क्या करने का है बाबा तो अव्यक्त होकर इतना सारा काम कर रहा है। अभी हम क्या कर रहे हैं।

18) बाबा समान विकर्माजीत, कर्मातीत, सम्पूर्ण, अव्यक्त बनने का पुरुषार्थ साथ-साथ हो। विकर्माजीत बनने का अटेन्शन है तो जरा भी साधारण संकल्प भी न आवें। साथ-साथ कर्मातीत फिर वैल्यु पर ध्यान रखो, तो अव्यक्त लगेंगे।

19) सोते-जागते, चलते-फिरते, चेहरे-चलन बाप का साक्षात्कार कराये। योग ज्वालामुखी हो। योग लगा नहीं रहे हैं, योगी जीवन है। हमारे नूर में बाबा, बाबा की नूर में हम हैं। फिर जो देखेगा उसको बाबा ही दिखाई पड़ेगा।

20- बाप समान सच्ची दिल, रहमदिल, बड़ी दिल, मजबूत दिल चाहिए। दिल अगर थोड़ी नर्म हो गई, थोड़ी कठोर हो गई, तो बाबा नूर में नहीं रहेगा, हम बाबा के नूर में नहीं रहेंगे। अच्छा। ओम् शान्ति।

सूक्ष्म चेकिंग के लिए चार्ट

1) संकल्प, समय और श्वांस तीनों की वैल्यु को समझ इन्हें सफल कर रहे हैं? हर संकल्प पावरफुल, शुद्ध, श्रेष्ठ और दृढ़ है?

2) सच्चाई, सफाई और सादगी... तीनों का रिकॉर्ड ठीक है?
   (a) स्थूल सूक्ष्म सफाई से माइन्ड हेल्दी बना है?
   (b) देही-अभिमानी स्थिति रहती है? कोई कोने में भी देह-अभिमान छिपा हुआ तो नहीं है?
   (c) सच्ची दिल से साहेब को राज़ी किया है? और कोई बात दिल में तो नहीं है?
   (d) जीवन में सादगी की वैल्यु है? एकनामी और एकॉनामी से चलते हैं? अन्दर जरा भी लोभ तो नहीं है?

3) अन्दर से आत्मा सदा रेस्ट का अनुभव करती है या कभी रेस्टलेस हो जाती है?
   (a) योग में थकावट का अनुभव तो नहीं होता है?
   (b) कभी व्यर्थ संकल्प थकाते तो नहीं हैं?

4) बाबा कहते बच्चे कम बोलो, धीरे बोलो, मीठा बोलो, जो बोलो वो सच बोलो.. क्या इस पर पूरा ध्यान है?

5) यज्ञ के कायदे कानून जो बने हुए हैं उसी प्रमाण चलते हैं? लव और लॉ का बैलेन्स है या जीवन में रूखापन है?

6) ब्रह्मा बाप समान विकर्माजीत, कर्मातीत, सम्पूर्ण, अव्यक्त बनने का पुरुषार्थ चल रहा है?

7) बाबा के समान सच्ची दिल, रहमदिल, बड़ी दिल, मजबूत दिल है? कभी नर्म, कभी कठोर दिल तो नहीं होती है?

23-01-12

"याद का चार्ट और रिगार्ड देने का रिकॉर्ड ठीक रखो, भूल से भी अब कोई भूल न हो"

(दादी जानकी)

बाबा कहते बच्चे अब जल्दी जल्दी मेरे साथी बन जाओ। साथी बनना माना पहले विकर्माजीत, कर्मातीत फिर अव्यक्त, सम्पूर्ण फरिश्ता, ऐसा बनना है। बाबा ने कहा दो मास में लेकिन उसके पहले ही बन जाओ, कोई कमी न रहे, इसके लिये ज्वालामुखी योग द्वारा विकर्मों का विनाश कर विकर्माजीत बनो। बाबा ने तो अपने आप सब कुछ करके अपना आप छिपाया और हमको आगे रखा है। तो बाबा ने जो किया वो हमें भी गुप्त रूप में महावीर बन करना है। महावीर कभी भी घबराता नहीं है, मूँझता नहीं है, डरता नहीं है, बल्कि सदा ही मुस्कराता रहता है। तो मैं राय देती हूँ कि मुस्कराना सीखो, अपनी रिहर्सल करो, कभी भी चेहरा उदास न हो। उदास चेहरा बाबा को अच्छा नहीं लगता है, हर्षितमुख चेहरा बाबा को अच्छा लगता है। जो अन्दर चित्त में है वो चेहरे पर आता है, तो चलन भी वैसी हो जाती है। तो भिन्न-भिन्न प्रकार से अपना चार्ट रखना है। पहले तो अपना चेहरा देखें क्योंकि कईयों की चेहरे और चलन को देख उनकी जीवन भी अच्छी बन गयी है। यह कैसे चले हैं मैं भी ऐसे ही चलूँ। फॉलो फादर सी फादर, इसमें से पहले क्या? सी फादर।

तो जो बाबा को देखता रहता है वो सदा खुशराज़ी है, कभी भी वो नाराज़ हुआ ही नहीं है। बाबा तो सबको देखता ही रहता है, अभी हमारा काम है बाप को देखते रहना। सतधर्म, सचखण्ड बनाने में बाबा ने अपना साथी बनाया है, इसमें भगवान को साथी समझना और साक्षी हो पार्ट बजाना। क्यों, क्या में नहीं आओ, कैसे होगा क्या होगा? यह एक चार्ट खराब हो जाता है। सदा ही अपने को शिव शक्ति समझने से कभी भी कोमल दिल नहीं होंगे। हिम्मत रखो तो बाबा लाख गुणा मदद करने के लिये बंधायमान है क्योंकि अन्दर से पक्का है कि निश्चय में विजय हुई पड़ी है, इसमें कोई दो राय नहीं है, सच्ची भावना है तो प्रैक्टिकल भाड़ा मिलता है। स्वयं भगवान मेरा साथी है तो क्या करेगा काज़ी...। समझदार, होशियार, खबरदार बन कोई भी बात में कुछ भी हो जाये लेकिन बाबा के साथ का अनुभव बहुत-बहुत मजबूत बनाता है। कोई भी बात आयी, गयी। फिर अभी जो करना है वो करो, बाकी जो हुआ उसे भूल जाओ, रिपीट नहीं करो, न अपनी न अन्य की भी भूल को रिपीट नहीं करो। भूल को रिपीट करना भी बड़ी भूल है।

एंजिल को अपने आप मिलता है तो फिर वो दाता बन जाता है। जैसे मेरा बाबा है, दाता है, करते हुए न्यारा है। भाग्य विधाता है, वरदाता है। याद में रहकर सेवा करना, करने के बाद फिर याद में रहना इतना अपना ऐसा अच्छा चार्ट रखना, इसमें कोई बहाना नहीं देना है। इस तरह से अपना चार्ट और सबको रिगार्ड देने का रिकार्ड अच्छा रखना है। बाबा कहते हैं चार्ट है याद का, फिर जितनी सेवा करते हैं उतनी शक्ति आती है। संगमयुग पर बाबा जितनी सेवा कराता है उतना भाग्य है। जो सच्चा बनता है, सच्चाई से काम लेता है इसमें कोई बहाना नहीं देता है, तो बाबा यह देख बहुत खुश होता है। ऐसा मैं पुरुषार्थ करुं जो बाबा कहे श्रीमत पर चलने वाला बच्चा। जो मनमत, परमत से फ्री है वो बाबा का प्यारा बच्चा है। मीठा बोलो, थोड़ा बोलो, सच बोलो क्योंकि हम सबके दिल में एक बाबा है और एक बाबा के दिल में हम सब, तो यह भी कमाल है। जिसके दिल में बाबा है वो सदा खुश रहेंगे, अपना चार्ट अच्छा रखेंगे। खुशनसीब हूँ जो बाबा के करीब हूँ और कुछ नज़र नहीं आता, एक बाबा ही दिल में नज़र में आता। तो मैं खुशनसीब हूँ ना। यही तो सेवा है, खुश रहना खुशी बांटना। हम भी खुश, बाबा भी खुश, जहान भी खुश। ओम् शान्ति।

11-02-13

"अभी माया को गुडबाय करो तो नो प्रॉब्लम"

(गुल्जार दादी जी डबल विदेशी भाई-बहनों के साथ)

सभी के मन में अभी भी कौन याद है? बापदादा, क्योंकि मेरा बाबा है ना। तो मेरी चीज़ तो भूलने वाली है ही नहीं। भूल सकती है? कभी कभी भूल जाता है! बाबा से तो बहुत प्यार है तो उसे दिल में बिठाया है ना। जो बात दिल में बैठ जाती है वो तो भूल ही नहीं सकती और बाबा हार्ट में बैठा है तो आप कम्बाइण्ड हो गये। हमारा कम्बाइण्ड आलमाइटी अथॉरिटी है, तो कभी भी कोई तकलीफ होती है तो जो नजदीक होता है, उसको याद किया जाता है। तो आप क्या करते हो? जब अकेले हो जाते हो तब माया आ जाती है, इसलिए कभी अकेले नहीं बनो। नहीं तो कमजोर हो जायेंगे। तो यह पाठ पक्का करो तो माया की हिम्मत ही नहीं होगी क्योंकि आप कम्बाइण्ड हो तो माया से डरने की क्या बात है। तो माया आती है माना आप अपने को अकेला समझते हो। तो अभी माया को गुडबाय करो तो नो प्रॉब्लम। बाबा चाहता ही यह है कि हमारा एक एक बच्चा सदा हर्षित चित्त, मायाजीत हो। तो अभी यहाँ मधुबन में कम्बाइण्ड रूप की ट्रायल करना। तो नो प्रॉब्लम। आज अगर प्रॉब्लम को विदाई दे दी तो बाबा खुश हो रहा है, दिखाई दे रहा है बाबा का मुस्कराता हुआ चेहरा! जैसे अभी सभी का भी चेहरा बहुत अच्छा लग रहा है, सदा ऐसे ही रहें तब कहेंगे मायाजीत। बाबा ने एक सेकेण्ड में इस दृष्य का फोटो निकाल लिया, आप भी अपने दिव्य दृष्टि में यह फोटो खींच लो। आपको सदा खुशी मिल गयी, बाबा सदा साथ है माना सदा खुशी आपके साथ है। तो कभी कुछ बात हो जाये तब इस साथ को याद करो, तो यह साथी साथ देगा माना सहयोग देगा लेकिन साथ नहीं छोड़ना। यह सहज है ना, अब पत्र नहीं लिखना बाबा यह है, यह है...। दिल में ही बाबा बैठा है तो दिल से बाबा बोलो तो बाबा सेवा के लिए सदा हाज़िर हो जायेगा।

अभी करना क्या है? अभी यही खुशी का, सुख का वायुमण्डल फैलाओ क्योंकि दुनिया में दु:ख बहुत बढ़ रहा है। लेकिन हैं तो हमारे भाई ही ना, तो जो दु:खी हैं उन्हों को सुख का वायब्रेशन दो। आपको कोई भी देखे, कितना भी मुरझाया हुआ हो आपको देख करके मुस्कराने लगे, अब ऐसी सेवा करके दुनिया को परिवर्तन करना है। इसके लिए मैं अपना फेस, अपनी चलन, अपना बोल जो भी है वो ऐसा करूँ जो हमको देखके दूसरे भी खुश हो जायें। तो यह सर्विस करनी आती है, योग में बैठके सकाश देना यह आता है ना। सकाश देना माना कोई इमर्ज करके नहीं, आत्मायें हैं ना, तो आत्माओं को परमात्मा से हमको सकाश मिल ही रही है। तो वो परमात्मा की सकाश जो है अपने द्वारा औरों को दो। सारी दुनिया आपके लिए सकाश लेने के लिए तरसती है क्योंकि दु:ख तो बढ़ ही रहा है, देखते हैं और सुख चाहते सभी हैं तो आप द्वारा वो सुख और शान्ति की जो सकाश जायेगी ना तो दुनिया परिवर्तन हो जायेगी। तो अभी ऐसी सेवा करेंगे ना, ऐसे नहीं जो टीचर्स हैं वही इस सेवा के निमित्त हैं, हम एक एक सेवा के लिए निमित्त हैं।

अब मन को चेक करो और मन को बिजी रखो। सुबह उठके मन को बिजी रखने का प्रोग्राम बनाके उसी अनुसार सारे दिन चलते रहो, इज़ी या थोड़ा डिफीकल्ट? जिन्होंने हाथ उठाये उनके तो प्रॉब्लम फिनिश हो गये, तो अभी जाके अपने क्लासेज में भी सुनायेंगे। तो सभी आल वर्ल्ड नो प्रॉब्लम हो जायेंगे।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

''साइलेन्स की शक्ति जमा करो''

1) बाबा हम बच्चों को किस निगाह से देखते हैं कि बच्चे इस देह से, इस पुरानी दुनिया से, इन 5 तत्वों से भी पार हो साइलेन्स में बैठे हैं? साइलेन्स एक बड़ी पावर है, इसमें सर्व शक्तियाँ समाई हुई हैं। जैसे साइन्स वालों ने साइन्स पावर से शक्तिशाली वस्तुयें बनाई हैं - एटम बाम्ब आदि। तो हम आलमाइटी अथॉरिटी अर्थात् सर्व शक्तियों से सम्पन्न परमधाम निवासी हैं। हम आत्मायें पार्टधारी हैं, पार्ट बजाकर अपने घर चले जाने की तैयारी कर रहे हैं। वह आया है पण्डा बनकर हमको साथ ले जाने के लिए। सर्व सम्बन्धों से मुक्त कराकर अपने साथ कनेक्शन भी जुड़ाया है क्योंकि अब घर वापिस जाना है। तो अब यहाँ बैठे भी उस साइलेन्स का अनुभव करना है। जब वहाँ चले जायेंगे तब उस साइलेन्स का अनुभव वर्णन नहीं कर सकेंगे। तो अब शान्ति का अनुभव भी बाप इस ही जीवन में कराते हैं।

2) जितना-जितना हम मन-बुद्धि को 5 तत्वों से पार ले जायेंगे तो जो स्वीट साइलेन्स होम है, वहाँ जाकर निवास करेंगे और लाइट-माइट का अनुभव करेंगे। जैसे सितारे आकाश तत्व के अन्दर अपने-अपने स्थान पर चमकते रहते हैं, वैसे हम भी ब्रह्म तत्व में जाकर बाप के साथ उस साइलेन्स की शक्ति का अनुभव कर सकते हैं। बाप को इन आंखों से नहीं देख सकते हैं लेकिन उसके कर्तव्य द्वारा, उनके गुणों द्वारा, शक्तियों द्वारा उसका अनुभव होता है। तो जितना हम उसमें स्थित रहेंगे उतना ही हम उस साइलेन्स पावर का अनुभव करेंगे। उस याद से हमारे अनेक जन्म के विकर्म विनाश होते हैं और मन के संकल्प-विकल्प भी मर्ज हो जाते हैं। मास्टर आलमाइटी की स्टेज का अनुभव होता है। जितना-जितना अभ्यास करते जायेंगे उतना बेहद विश्व की सेवा कर सकेंगे। जो वाचा द्वारा हम सर्विस नहीं कर पाते, वह हम समर्थ संकल्प द्वारा दूर वाली आत्माओं की सेवा कर सकते हैं। बाबा कहते हैं आपके बहुत भक्त हैं, जो आपका आह्वान कर रहे हैं, प्यासे हैं। तो वे हमारी झलक को कब देख सकते हैं? जब हम एकाग्र अवस्था में रहेंगे। हमारा संकल्प उतना चले जो समर्थ हो, व्यर्थ न आवे। वाचा भी उतनी ही चले जो समर्थ हो, सेवा अर्थ हो - व्यर्थ न जावे। ऐसा गुप्त पुरुषार्थ चाहिए। बुद्धियोग की लाइन क्लीयर हो, बुद्धि पवित्र हो तो बाप की प्रेरणाओं को, बाप की पावर को कैच कर सकते हैं।

3) जब हम देह से निकल बाप को याद करते हैं तो बुद्धियोग जुट जाता है तब ही बाप से हम सर्वशक्तियों का अनुभव कर सकते हैं। जब हम इस 5 तत्वों से पार हो जाते हैं। पृथ्वी के आकर्षण से परे हो जाते हैं, जब ही हम रीयल शान्ति का अनुभव कर सकते हैं।

4) हम दुनिया की निगाहों से दूर, आवाज से परे परम शान्ति का अनुभव करते हैं, तो आवाज में आना पसन्द नहीं आता। हम सिर्फ पार्ट बजाने के लिए कर्मेन्दियों का आधार लेकर आते हैं – ऐसे अनुभव होगा।

5) इस साइलेन्स की शक्ति से क्विक सर्विस कर सकते हैं। साइलेन्स पावर दूर-दूर में जाकर काम करेगी। बाबा कहते बच्चे तुम विश्व कल्याणी हो। तो हमारा विचार चलता कि हम सारे विश्व की सेवा कैसे करेंगे। जब साइलेन्स पावर कई जन्मों के विकर्मों को भस्म कर सकती है तो विश्व की आत्माओं की सेवा क्यों नहीं कर सकती। हम सूक्ष्म में किसी भी आत्मा को बुला सकते हैं, उनसे रूह-रिहान कर सकते हैं, उसे लाइट-माइट का दान दे सकते हैं। साइलेन्स पावर से ऐसा औरों को अनुभव होगा। सेन्टर पर पांव रखेंगे तो जैसे उन्हों को सन्नाटा महसूस होगा। महसूस होगा तो कितनी शान्ति है।

6) यह बहुत मीठी अवस्था है। इससे बहुत शान्ति, अतीन्द्रिय सुख की महसूसता होती है। साइलेन्स पावर अर्थात् मास्टर सर्वशक्तिमान की स्थिति। हमारी सिर्फ साइलेन्स नहीं है लेकिन हमारी ओरिज्नल स्टेज जो बाप समान स्टेज है, उसमें स्थित होना है। ओरिज्नल स्टेज है मास्टर सर्वशक्तिमान की स्थिति, जिसमें कोई भी संकल्प की उत्पत्ति नहीं होती है, जिसको दूसरे शब्दों में बीजरूप की स्थिति कहेंगे। हम भी बिन्दु हैं बाबा भी बिन्दु है, हम बाबा के साथ कनेक्शन जोड़े, सर्व शक्तियों के स्टॉक को जमा करें। जैसे बाप विश्व कल्याणी है वैसे हम बच्चे हैं, उसको लाइट माइट अर्थात् शान्ति का पुन्ज कहें। वह माइट हाउस अर्थात् सर्व शक्तियों से भरपूर होगा। उसकी स्थिति द्वारा सेवा होती रहेगी। दृष्टि द्वारा निराकारी स्थिति का साक्षात्कार होता रहेगा। ओम् शान्ति।